छत्तीसगढ़ की जन वेबसाइट

www.cgnet.in

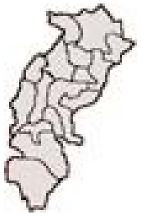

रिबाई पंडो कांड के 15 साल

बासी मा उफान

शुभांशु चौधरी

नया साल एक ऐसा समय होता है जब हम ये भी तलाश करते हैं कि इस साल किन प्रमुख घटनाओं की बरसी है और उन घटनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व रह गया है।

जैसे 2007 में हम आजादी की 60वीं वर्षगांठ मनाएंगे। इसी साल हम आदमी के 1957 में अंतरिक्ष में पहले उपग्रह स्पूतनिक के भेजे जाने की 50वीं वर्षगांठ भी मनाएंगे। उसके साथ हम ये याद करेंगे कि आज से 25 साल पहले 1982 में दिल्ली में एशियाई खेल हुए थे और उस जमाने में राजीव गांधी के नेतृत्व में शुरू हुए दूरदर्शन के रंगीन कार्यक्रमों ने हमारा जीवन आज कितना बदल दिया है।

ब्रिटेन के लोग आज 10 वर्ष बाद फिर थोड़ी और ये चर्चा करेंगे कि आखिर 1997 में लेडी डायना के साथ हुआ हादसा एक्सीडेंट था, हत्या या आत्महत्या।

छत्तीसगढ़ राज्य स्वयं 6 साल पुराना है तो उससे जुड़ी घटनाएं उतने पुराने तो नहीं हो सकते। पर संभवतः सन 2007 यह विचार करने का वर्ष है कि 15 सालों बाद तत्कालीन मध्यप्रदेश में सुर्खियों में आए भूख से मौत से पीड़ित रिबाई पंडो के परिवार का क्या हुआ? आखिर रिबाई पंडो की घटना देश में भूख से मौत की राजनीति की शुरुआत थी।

क्या इन 15 सालों में नए प्रदेश ने भूख से लड़ने की जंग में कोई नई बात सोची है?

संयोगवश इस साल के पहले दिन 1 जनवरी को मैं उसी वाड्रफनगर में था जहां के मुख्यालय में तत्कालीन विपक्ष के नेता दिग्विजय सिंह ने रिबाई पंडो के घर में हुए तथाकथित भूख से हुए दो मौतों को लेकर भूख हड़ताल किया था।

सन 1992 में दिग्विजय सिंह को सरगुजा के महाराजा के माध्यम से यह खबर मिली थी कि वाड्रफनगर के समीप बीजाकुरा गांव के निवासी रिबाई पंडो की बहू जाकली बाई और उसके बेटे की भूख से मौत हो गई थी।

उस समय सुंदरलाल पटवा की भाजपा सरकार सत्ता में थी। और अगर आपको याद हो तो वाड्रफनगर के भाजपा नेता रामविचार नेताम ने अखबारों में यह बयान दिया था कि रिबाई पंडो ने अपनी बहू जकलीबाई और नाती की मौत के बाद 80 ब्राम्हणों को मृत्युभोज कराया है तो यह भूख से मौत कैसे हो सकती है?

1992 से लेकर अब तक 15 सालों में वाड्रफनगर में काफी बदलाव आया होगा। इस बीच प्रदेश का विभाजन होकर छत्तीसगढ़ नया प्रदेश हो गया। पटवा सरकार के जाने के बाद एक बार फिर भाजपा की सरकार नए राज्य में सत्ता में काबिज है और वही नेता रामविचार नेताम आज प्रदेश के गृहमंत्री भी हैं।

पर बीजाकुरा के ग्रामीणों की जिंदगी इन 15 सालों में कितनी बदली है?

मैंने सोचा चूंकि मैं वाड्रफनगर में ही हूं इसलिए मुझे बीजाकुरा चलकर देखना चाहिए।

वाड्रफनगर 21वी सदी में 20वीं सदी के सुविधाओं वाला एक छोटा सा विकासखंड प्रमुख है। यहां से बीजाकुरा की भौगोलिक दूरी कोई खास नहीं है पर ये यात्रा हमें कई सदियों पीछे ले जाने वाली रही।

बीजाकुरा को जाने वाली सड़क भारत के सबसे खराब सड़कों में से एक है। और वह सड़क भी थोड़े दूर जाकर खत्म हो जाती है।

पर चूंकि हम इतनी दूर आ चुके थे तो हमने पैदल ही बीजाकुरा पहुंचने का तय किया। वाड्रफनगर में काम करने वाले समाजसेवी प्रतापनारायण सिंग मेरे साथ थे।

कई नदिया पार करने के बाद सड़क बिलकुल समाप्त हो गई और अब हम पहाड़ी रास्तों पर चल रहे थे। बीजाकुरा के पड़ोसी गांव में रहने वाले एक आदिवासी ने हमें रास्ता दिखाने का जिम्मा लिया। हम चले जा रहे थे पर पहाड़ी रास्ता खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

पथ प्रदर्शक आदिवासी से मैंने पूछा यहां नक्सली आते हैं क्या? उसने जवाब दिया 'हां, दसेक दिन पहले मामा लोग एक जीप में सवार होकर आए थे'।

जब तक हम बीजाकुरा पहुंचे शाम हो चुकी थी। बीजाकुरा गांव के रूदल प्रसाद से मुलाकात हुई, जब उसने सुना कि हम रिबाई पंडो का घर ढूंढ रहे हैं उसने बताया 'अब वो लोग कोई यहां नहीं रहते'।

मैंने कहा समझा नहीं, तो रूदल प्रसाद ने कहा 'मेरे घर चलिए, विस्तार से बताता हूं'। रूदलप्रसाद के घर चारपाई में बैठकर उसने हमें बताया कि 1992 के कुछ साल बाद रिबाई पंडो की मौत हो गई थी। और उसके थोड़े दिन बाद रिबाई की पत्नी और उसके बेटे की भी मौत हो गई।

रिबाई के परिवार में अब सिर्फ उसका नाती राम साय बचा है पर वह अपने ससुराल चवर सराई गांव में रहता है। रिबाई का घर भी टूट गया है और उसकी जमीन पर भी अब कोई खेती नहीं होती।

उन्होंने मुझे दिखाया कहां पर रिबाई पंडो का घर हुआ करता था जहां पर 1992 में सारे नेता आया करते थे। आज उसी जगह पर सिर्फ जंगली उगे हैं।

मैंने पूछा ये मौतें कैसे हुई? 'क्या मालूम साहिब, गरीबी भी है और बीमारी भी रही होगी।'

मैंने पूछा पर रामविचार नेताम ने तो कहा था कि रिबाई ने अपनी पत्नी की मौत के बाद 80 ब्राम्हणों को भोज कराया था। 'क्या आपको हमारी हालत ब्राम्हणभोज कराने लायक दिखती है?' रूदल ने पूछा। मैंने आगे पूछा रिबाई तो चले गए पर अब आप लोगों की जिंदगी कैसी चल रही है?

'क्या बताएं साहिब, हमारी भी भूखो मरने की हालत है। यहां चावल की फसल तो होती नहीं। इस बार तो इतना सूखा है कि जौ और मक्का भी नहीं हुआ। हम लोग पेज और लाकड़ा खाकर किसी तरह जिंदा हैं।'

मेरे पूछने पर उन्होंने लाकड़ा का जंगली फूल दिखाया जिसे उबालकर वे लोग चावल के पेज के साथ खा रहे हैं। 'हम मजदूरी करने रघुनाथनगर जाते हैं, मजदूरी मिल गई तो उससे खुदी (चावल के छोटे टुकड़े) खरीद लेते हैं जिससे पेज बनता है' रूदल की पत्नी ने बताया रूदल प्रसाद ने रोजगार गारंटी का अपना नया-नया बना कार्ड हमें दिखाया। पर उससे उसे एक दिन का काम भी अब तक नहीं मिला है यद्यपि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने राष्ट्र को यह वादा किया है कि अगले दो फरवरी तक रूदल प्रसाद जैसे प्रत्येक परिवार को निश्चित रूप से 100 दिन का रोजगार मिलेगा और यदि रोजगार न मिले तो बेरोजगारी भत्ता मिलेगा।

रूदल प्रसाद के घर बैठे-बैठे हम बात करते रहे और हमे पता भी नहीं चला कि कब अंधेरा हो गया। यद्यपि बीजाकुरा भौगोलिक रूप से छत्तीसगढ़ राज्य के अंतर्गत आता है पर हमारे मोबाइल फोन पर पड़ोसी उत्तर प्रदेश के ऊर्जा नगरी सिंगरौली के मोबाइल टॉवर का स्वागत संदेश मिला।

प्रताप भाई ने बताया 'ये क्षेत्र देश में पैदा होने वालों के लिए और बिजली का काफी बड़ा हिस्सा पैदा करता है, पर उसके कुछ किलोमीटर की दूरी पर बीजाकुरा जैसे गांव आज भी सोलवी सदी में जीने को मजबूर हैं।'

बीजाकुरा में हमें बिजली का खंबा मिला पर उसमें कोई तार नहीं था। सबसे करीब का अस्पताल 10 किलोमीटर दूर रघुनाथ नगर में है जहां रिबाई पंडो से सहानुभूति जताने आए प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव का हेलीकॉप्टर उतरा था। गांव में पक्का स्कूल जरूर बन गया है, पर आज तक कोई भी गांव से 10वी भी नहीं पहुंच पाया है। दो चेक डेम भी बने हैं पर उनमें हमें कोई पानी नहीं दिखा। गांव में कोई हेंडपंप भी नहीं है। लौटते समय वाड्रफनगर के रास्ते रघुनाथनगर में किसानों ने बताया 'आप किस बदलाव की बात कर रहे हैं, प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के हेलीकॉप्टर के उतरने के लिए जगह बनाने के लिए कुछ बिजली के खंबे उखाड़े गए थे वे खंबे आज 15 साल बाद भी नहीं लग पाए हैं। वे किसान आज भी अंधेरे में जी रहे हैं जिनके घर प्रधानमंत्री के आने के पहले बिजली हुआ करती थी।'क्या कुछ ऐसा किया जा सकता है कि इस भूख के मुद्दे पर कम से कम और बातचीत ही शुरू हो?

(लेखक बीबीसी के पूर्व पत्रकार हैं और सिटीजन जर्नलिज्म के प्रयोग छत्तीसगढ़ नेट w w w.cgnet.in से जुड़े हैं।)

PACS Madhya Pradesh & Chhatisgarh